गुरु नानक – सबद ५४
ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १८

ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥
बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥
मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥
दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥
आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥
पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥
नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥
गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥
अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥
आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥३॥
चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥
चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥
जे धन कंति न भावई त सभि अड्मबर कूड़ु ॥४॥
सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥
जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥
नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥

सार: इस सबद में गुरु नानक एक बंद दरवाजे की उपमा देते हैं, जो हमें घर के आराम से वंचित रखता है। इसका अर्थ है कि झूठे मोह और भ्रम में फंसे रहने से हम दिव्य सत्य तक नहीं पहुँच सकते। हम अपने मन को खोल और इन भ्रामक धारणाओं से ऊपर उठ कर "नव निधियां" (नौ ख़ज़ाने) प्राप्त कर सकते हैं। ये नौ गुण आध्यात्मिक और सांसारिक सुख के लिए आवश्यक माने जाते हैं जैसे कि—सच्चाई, बुद्धि, संवाद क्षमता, रचनात्मकता, धैर्य, आत्मज्ञान, सुरक्षा, उच्च

उद्देश्य और जीवनयापन के लिए आवश्यक संसाधन। इन गुणों पर ध्यान केंद्रित करने से हमें सद्भाव से रहने का मार्गदर्शन मिलता है।

ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
जो अभागे मनुष्य द्वैत मोह के कारण भ्रमित हो जाते हैं, उनका जीवन व्यर्थ माना जाता है।

कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥
वह खारी मिट्टी की दीवार की तरह हैं, जो धीरे-धीरे गलकर गिर जाती है।

बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥
ज्ञान के सार को अपनाए बिना, किसी को सुकून नहीं मिल सकता। सर्वव्यापी एकता के प्रति प्रेम के बिना कोई भी दुख से उबर नहीं सकता। (१)

मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥
अगर आत्मज्ञान रूपी साथी ही न हो, तो बाहरी धार्मिक अलंकरण की सजावट का क्या मूल्य है?

दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे बंद दरवाजे के कारण घर का आराम पहुंच से बाहर हो जाता है। वैसे ही असत्य के प्रभाव के मोह में फंसने से आध्यात्मिक आनंद नहीं मिल सकता। (१)(विराम)

आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥
सर्वयापी ऊर्जा में अनंत ज्ञान है और वह कोई ग़लती नहीं करती; यह एक किसान की तरह सृष्टि का पोषण करती है।

पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥
जैसे खेती के लिए पहले मिट्टी तैयार करनी होती है,जुताई होती है, वैसे ही सत्य को अपनाने के लिए मन को भी आत्म-चिंतन की शुद्धी की आवश्यकता होती है।

नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥
इस आत्मिक प्रयास से नव निधियां (नौ गुण) प्राप्त होते हैं, जो आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि लाते हैं। (२)

गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥
ज्ञान की शक्ति को जानते हुए भी यदि कोई उसे समझने का प्रयास नहीं करता, तब मात्र व्यवहार और शिष्टाचार का कोई महत्व नहीं रह जाता।

अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥
जिनके पास दर्शन की कमी है वह आत्म-चिंतन करना छोड़ देते हैं, जबकि जो लोग अपनी इच्छाओं से त्रस्त हैं वह अज्ञानता की छाया में अपने ही भ्रम में फंसे रहते हैं।

आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥३॥
वह स्वयं को अच्छे और बुरे के द्वंद्व से मुक्त नहीं कर पाते जिससे उन्हें अपने आध्यात्मिक विकास और गिरावट के संघर्षों की पीड़ा सहन करनी पड़ती है। (३)

चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥
महंगा चंदन खरीदकर, उत्तम केसर लगाकर और मांग को सिंदूर से सजा कर।

चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥
चंदन का तेज़ इत्र लगा कर और कपूर मिला पान चबा कर।

जे धन कंति न भावई त सभि अड्मबर कूड़ु ॥४॥
यदि यह बाहरी सजावटें चेतना रुपी प्रिय साथी को प्रसन्न नहीं करती हैं तो बेकार हैं। इसका अर्थ है कि सच्ची ख़ुशी आंतरिक संतुष्टि से आती है, दिखावे से नहीं। (४)

सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥
भौतिक सुख-संपत्ति में उलझना और बाहरी साज-सज्जा अंततः व्यर्थ हैं।

जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥
जब तक ज्ञान के सार में डूबा नहीं जाता तब तक आंतरिक सुंदरता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥
नानक कहते हैं कि वह धन्य हैं जो सर्वव्यापी चेतना से प्रेम करते हैं और उसे अपनाते हैं। (५)(१३)

तत्त्व: गुरु नानक इस गहन सत्य पर प्रकाश डालते हैं कि बाहरी दिखावे, भौतिक संपत्ति या सतही सजावट का कोई स्थायी मूल्य नहीं है जब तक कि वह अधिक गहन आंतरिक संतुष्टि के साथ जुड़े न हों। सच्चा खजाना इसमें नहीं है कि हम क्या जमा करते हैं या दुनिया हमें कैसे देखती है, बल्कि हमारी चेतना में है और सर्वव्यापी ऊर्जा के परम सत्य के साथ संबंध में है। जो लोग इस वास्तविकता को समझते हैं वह असल में धन्य हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com